

Padma Bhushan



SMT. GURMEET BAWA (POSTHUMOUS)

Smt. Gurmeet Bawa was a renowned Punjabi folk singer. She was widely known for her prominent role in the promotion and recognition of the culture of Punjabi Region of India throughout the world. Her singing skills got famous because of her style of singing a long breathless alaap (aka Lambi Hek in Punjabi) which exceeded the duration of 45 seconds in every song she sang.

2. Born on 18th February, 1944, Smt. Bawa received her diploma in JBT from Patti (a village in Punjab) after which she became a teacher of an elementary school. Afterwards, she got married to Shri Gurkirpal Singh Bedi in 1968. This is when she began her singing career commercially. She took Punjabi folk singing professionally.

3. Smt. Bawa commenced singing for the national Radio and Television right from early years of her singing career. Later, she was upgraded as an A-High Artist of All India Radio. She was known for performing with Punjabi folk instruments on every stage. She was the first woman to sing for the inaugural ceremony of Doordarshan Jalandhar.

4. Smt. Bawa performed at various local, national and international stages. She performed at Wagah Border on the occasion of opening ceremony of the first Indo-Pak bus. She represented India in the Festival India, USSR, in 1988, under the directorship of ICCR. There, in Georgia, she made a world-record for singing a breathless alaap (Lambi Hek) that went on for 45 seconds. This record has been notified in Guinness Book of World records and the record is unbroken till date. She represented India in the Festival of India, Japan, 1989 again in the directorship of ICCR. Through ICCR, she represented India and Punjabi folk culture in various countries including Syria, Libya, Thailand, Malaysia, France, Pakistan, Canada, Russia, New Zealand, Australia, etc.

5. Smt. Bawa gave her voice in various playbacks for Punjabi movies, namely, Sarpanch, Balbeero Babhi, Lajjo, Suhaag Diyan Chudiyan, Jora Jatt. She recorded various songs with numerous organizations and companies such as, Sangeet Natak Akademi, Punjab Arts Council, North Zone Cultural centre, Spic Macay, ICCR, Song and Drama Division, Punjab Kala Kendra, etc. She represented Punjabi Folk throughout the world for 53 long years. She kept performing till her last breath.

6. Smt. Bawa was felicitated with numerous awards, notably, the State award of Punjab, 1991; Devi Ahilya Award by the Govt. of Madhya Pradesh; Singer of the millennium by American Biographical Institute; Lifetime achievement award, ETC; Zee Anhad award; Kalpana Chawala award; Sangeet Natak Akademi award; Khalsa Trae Shatabdi award, Anandpur Sahib; 550th Guru Nanak Jayanti award, Shan-e-punjab award; Punjai filmfare award etc.

7. Smt. Bawa passed away on 21st November, 2021.

पद्म भूषण



श्रीमती गुरमीत बावा (मरणोपरांत)

श्रीमती गुरमीत बावा एक प्रसिद्ध पंजाबी लोक गायिका थीं। उन्हें दुनिया भर में भारत के पंजाबी क्षेत्र की संस्कृति के प्रचार-प्रसार और पहचान दिलाने में अपनी अहम भूमिका के लिए जाना जाता है। उनकी गायन शैली बिना सांस लिए एक लंबे आलाप (पंजाबी में लंबी हेक) के लिए प्रसिद्ध है, जो उनके हर गीत में 45 सेकेंड से अधिक का होता था।

2. 18 फरवरी, 1944 को जन्मी, श्रीमती बावा ने पट्टी (पंजाब का एक गाँव) से जेबीटी में डिप्लोमा किया और एक प्राथमिक विद्यालय की शिक्षिका बन गईं। इसके बाद, वर्ष 1968 में श्री गुरकीरपाल सिंह से उनका विवाह हुआ। इसी समय उन्होंने व्यावसायिक रूप से अपना गायन कैरियर शुरू किया। उन्होंने पंजाबी लोक गायन को पेशे के रूप में अपनाया।

3. श्रीमती बावा ने अपने गायन कैरियर के शुरुआती वर्षों से ही आकाशवाणी और टेलीविजन पर गायन शुरू किया। बाद में, उन्हें आकाशवाणी की एक ए-श्रेणी की कलाकार की मान्यता दी गई। उन्हें हर मंच पर पंजाबी लोक वाद्ययंत्रों के साथ परफॉर्म करने के लिए जाना जाता है। वह दूरदर्शन के जालंधर उद्घाटन समारोह में गाने वाली पहली महिला थीं।

4. श्रीमती बावा ने कई स्थानीय, राष्ट्रीय और अंतर्राष्ट्रीय मंचों पर परफॉर्म किया। उन्होंने पहली भारत-पाक बस की शुरुआत के अवसर पर वाघा बॉर्डर पर प्रस्तुति दी। उन्होंने आईसीसीआर के निर्देशन में वर्ष 1988 में फेस्टिवल इंडिया, सोवियत संघ में भारत का प्रतिनिधित्व किया। वहाँ, जॉर्जिया में, उन्होंने एक बिना सांस के अलाप (लंबी हेक) गाने का विश्व-रिकॉर्ड बनाया जो 45 सेकेंड का था। यह रिकॉर्ड गिनीज बुक ऑफ वर्ल्ड रिकॉर्ड में दर्ज है और अब तक वह रिकॉर्ड कोई नहीं तोड़ पाया है। उन्होंने फिर से आईसीसीआर के निर्देशन में 1989 में फेस्टिवल ऑफ इंडिया, जापान में भारत का प्रतिनिधित्व किया। आईसीसीआर के माध्यम से, उन्होंने सीरिया, लीबिया, थाईलैंड, मलेशिया, फ्रांस, पाकिस्तान, कनाडा, रूस, न्यूजीलैंड, ऑस्ट्रेलिया आदि में पंजाबी लोक संस्कृति का प्रतिनिधित्व किया।

5. श्रीमती बावा ने कई पंजाबी फिल्मों जैसे सरपंच, बल बीरो भाभी, लज्जो, सुहाग दियां चुड़ियां, जोरा जट के लिए पार्श्वगायन भी किया। उन्होंने कई संस्थानों और कंपनियों जैसे संगीत नाटक अकादमी, पंजाब कला परिषद, नॉर्थ जोन कल्चरल सेंटर, स्पिक मैके, आईसीसीआर, सांग्स एंड ड्रामा डिवीजन, पंजाब कला केंद्र आदि के लिए कई गीत रिकार्ड किए। उन्होंने 53 सालों तक दुनिया भर में पंजाबी लोक संगीत का प्रतिनिधित्व किया। वह आखिरी सांस तक गाती रहीं।

6. श्रीमती बावा को कई पुरस्कारों से सम्मानित किया गया, जैसे पंजाब का राज्य पुरस्कार, 1991; मध्य प्रदेश सरकार द्वारा देवी अहिल्या पुरस्कार; अमेरिकन बायोग्राफिकल इंस्टीट्यूट द्वारा सहस्राब्दी की गायिका; लाइफटाइम अचीवमेंट अवार्ड, ईटीसी; ज़ी अनहद पुरस्कार; कल्पना चावला पुरस्कार; संगीत समारोह नाटक अकादमी पुरस्कार; खालसा ट्राई शताब्दी पुरस्कार, आनंदपुर साहिब; 550वां गुरु नानक जयंती पुरस्कार; शान-ए-पंजाब पुरस्कार; पंजाबी फिल्म फेयर पुरस्कार इत्यादि।

7. श्रीमती बावा का 21 नवंबर, 2021 को देहावसान हो गया।